सपने का भी हक नहीं

कविता HSSLiVE.IN डॉ जे बाबू

लेखक के बारे में:

हिंदीतर प्रदेशों की हिंदी साहित्यकारों में प्रमुख है ड़ॉ जे बाबू। वे केरल के तिरुवनंतपुरम के यूनिवर्सिटी कॉलज के हिंदी विभागाध्यक्ष थे। सन् 2008 में सेवानिवृत्त होकर साहित्य-रचना में लीन रहे। उनका साहित्य समाज के हाशिएकृत वर्ग केलिए अर्पित है। मुक्तिधारा, उलझन, उलाहना आदि उनकी कविताओं का संग्रह है।

कविता के बारे में:

'सपने का भी हक नहीं' आपकी प्रसिद्ध कविता है, जिसमें एक गरीब मज़दूरिन का चित्र खींचा है, जो अपने एक कमरेवाले झोंपडी में रहकर महल का सपना देखती है। कवि यहाँ एक कठोर सामाजिक यथार्थ का चित्र खींचने का प्रयास की गई है कि गरीबों को सपने देखने का भी अधिकार नहीं है।

कवितांश से प्रश्नों का उत्तर ढूँढें:

I. इक कमरेवाली ..... कहाँ होगा?

(1) झोंपड़ी में कितने कमरे हैं?
एक कमरे।

(2) स्त्री कहाँ रहते हैं?
एक कमरेवाली झोंपडी में रहते हैं।

(3) स्त्री क्या कर रहे है?
स्त्री अपना विस्तृत घर खींचने लगी।

(4) 'अपना विस्तृत घर खींचने लगी' - कौन? कहाँ?
मज़दूरिन अपने मन-दीवार पर। (स्त्री अपने मन-दीवार पर)

(5) स्त्री अपना विस्तृत घर खींचने लगी - कब?
रात में बच्चों के सो जाने पर।

(6) स्त्री अपने विस्तृत घर में किन-किन कमरे बनवाना चाहती हैं?
अपने विस्तृत घर में खाने-पीने और सोने केलिए अलग-अलग कमरे है। इसके अलावा रसोई, बैठक और पूजा का कमरा भी बनवाना चाहती है।

(7) रसोई का स्थान कहाँ है?
रसोई का स्थान बैठक के निकट है।

(8) स्त्री का घर और सपने का घर में क्या-क्या अंतर हैं?
स्त्री के घर में केवल एक कमरा है। लेकिन सपने के घर विस्तृत है, जिस में खाने-पीने और सोने केलिए अलग-अलग कमरे है। रसोई, बैठक और पूजा का कमरा भी है।

(9) कवितांश का आस्वादन टिप्पणी लिखें।
हिंदीतर प्रदेशों की हिंदी साहित्यकारों में प्रमुख है ड़ॉ जे बाबू। 'सपने का भी हक नहीं' आपकी प्रसिद्ध कविता है, जिसमें एक गरीब मज़दूरिन का चित्र के सहारे एक कठोर सामाजिक यथार्थ का चित्र खींचने का प्रयास की गई है।

एक कमरेवाली झोंपड़ी में रहनेवाली गरीब मज़दूरिन अपने बच्चों के सो जाने के बाद नींद में डूब जाती है। उस नींद में वह एक विस्तृत महल का सपना देखती है। उस नए महल में खाने-पीने और सोने केलिए अलग-अलग कमरे है। रसोई है, बैठक है और पूजा का कमरा भी।

उस गरीब मज़दूरिन और उनके सपने के माध्यम से एक कठोर सामाजिक सच्चाई की प्रस्तुति हुई। कवि यह बताना चाहते है कि गरीब लोगों को सपने देखने का भी अधिकार नहीं है। उनका सपना एक कठोर यथार्थ पर टूटते है। आगे उसके लिए सपना देखना भी डरावना बन जाता है।

Do Not Copy

II. ऊपर की ..... सब रख दिए।

(1) भगवान को बिठाने का कमरा कहाँ बनवाना चाहती है?

या

पूजा का कमरा कहाँ होगा?

ऊपर की मंजिल में।

(2) स्त्री की समस्याएँ कब दूर हो गई?

ऊपर की मंजिल में भगवान को बिठाने का कमरा बनने पर स्त्री की समस्याएँ दूर हो गई।

(3) सपने के घर की छत कैसा है?

काँक्रीट की छत है।

(4) दीवारों का रंग क्या है?

पीले रंग।

(5) 'खिड़की-दरवाज़े सब रख दिए' – कहाँ?

या

खिड़की-दरवाज़े कहाँ बनाना चाहती है?

काँक्रीट के छत के नीचे, पीले रंग की दीवारों के मध्य में।

(6) कवितांश का आस्वादन टिप्पणी लिखें।

हिंदीतर प्रदेशों की हिंदी साहित्यकारों में प्रमुख है ड़ॉ जे बाबू। 'सपने का भी हक नहीं' आपकी प्रसिद्ध कविता है, जिसमें एक गरीब मज़दूरिन का चित्र के सहारे एक कठोर सामाजिक यथार्थ का चित्र खींचने का प्रयास की गई है।

एक कमरेवाली झोंपड़ी में रहनेवाली गरीब मज़दूरिन अपने बच्चों के सो जाने के बाद नींद में डूब जाती है। उस नींद में वह अपने मन-दीवार में एक विस्तृत घर का चित्र खींचती है। दो मंज़िलें वाली उस घर में खाने-पीने-सोने केलिए अलग-अलग कमरे हैं, रसोई है, बैठक है, पूजा का कमरा भी है। उस महल का छत काँक्रीट का है, दीवार पीले रंग का है और उस दीवार के मध्य में खिड़की-दरवाज़े भी होगा।

उस गरीब मज़दूरिन और उनके सपने के माध्यम से एक कठोर सामाजिक सच्चाई की प्रस्तुति हुई। कवि यह बताना चाहते है कि गरीब लोगों को सपने देखने का भी अधिकार नहीं है। उनका सपना एक कठोर यथार्थ पर टूटते है। आगे उसके लिए सपना देखना भी डरावना बन जाता है।

III. संगमरमर की चमक ..... शान में रहती रसोई।

(1) समानार्थी शब्द कवितांश से ढूँढ़कर लिखें।

शोभा देना	- भाना	औ	- और	ठाट-बाट	- शान

(2) घर की ज़मीन पर क्या चमकती है?

संगमरमर।

(3) बैठक में क्या-क्या चीज़ें होंगी?

या

बैठक की शोभा बढानेवाली वस्तुएँ क्या-क्या हैं?

मेज़-कुरसियाँ, टी. वी, होम थियेटर।

(4) रसोई पर क्या चमकती हैं?

ग्रानइट

(5) रसोई की शान और बढ़ानेवाले वस्तुएँ क्या-क्या है?

फ्रिड्ज और माइक्रोवेव।

(6) 'शान में रहती रसोई' - कैसे?

ग्रानइट चमकनेवाली रसोई में फ्रिड्ज और माइक्रोवेव होने पर शान ज्यादा बढ़ेंगी।

HSSLiVE.IN
Do Not Copy

(7) कवितांश का आस्वादन टिप्पणी लिखें।

हिंदीतर प्रदेशों की हिंदी साहित्यकारों में प्रमुख है ड़ॉ जे बाबू। 'सपने का भी हक नहीं' आपकी प्रसिद्ध कविता है, जिसमें एक गरीब मज़दूरिन का चित्र के सहारे एक कठोर सामाजिक यथार्थ का चित्र खींचने का प्रयास की गई है।

एक कमरेवाली झोंपड़ी में रहनेवाली गरीब मज़दूरिन अपने बच्चों के सो जाने के बाद नींद में डूब जाती है। उस नींद में वह अपने मन-दीवार में एक विस्तृत घर का चित्र खींचती है। चमकती संगमरमर से बनी बैठक की ज़मीन में मेज़-कुरसियाँ, टी. वी, होम थियेटर आदि होने पर शोभा और बढ़ेगा। रसोई की शान और बढ़ाने केलिए फ्रिड्ज, माइक्रोवेव आदि भी है।

उस गरीब मज़दूरिन और उनके सपने के माध्यम से एक कठोर सामाजिक सच्चाई की प्रस्तुति हुई। कवि यह बताना चाहते है कि गरीब लोगों को सपने देखने का भी अधिकार नहीं है। उनका सपना एक कठोर यथार्थ पर टूटते है। आगे उसके लिए सपना देखना भी डरावना बन जाता है।

IV. **मसहरी सुरक्षा ..... धमकी सपने में।**

(1) समानार्थी शब्द कवितांश से चुनकर लिखें।

मच्छरदानी - मसहरी निद्रा - नींद

(2) स्त्री कैसे नींद में पड़ी?

मसहरी सुरक्षा में।

(3) स्त्री कब तक नींद में पड़ी?

ज़मीन पर धूप के फैलने तक।

(4) स्त्री का सपना कब टूटते हैं?

स्त्री का सपना उसके नींद खुलने के पूर्व ही टूटते हैं।

(5) स्त्री का सपना कैसे टूटते हैं?

सपने में बैंक की नोटीस आ धमकने पर।

(6) कवितांश का आस्वादन टिप्पणी लिखें।

हिंदीतर प्रदेशों की हिंदी साहित्यकारों में प्रमुख है ड़ॉ जे बाबू। 'सपने का भी हक नहीं' आपकी प्रसिद्ध कविता है, जिसमें एक गरीब मज़दूरिन का चित्र के सहारे एक कठोर सामाजिक यथार्थ का चित्र खींचने का प्रयास की गई है।

एक कमरेवाली झोंपड़ी में रहनेवाली गरीब मज़दूरिन अपने बच्चों के सो जाने के बाद नींद में डूब जाती है। उस नींद में वह अपने मन-दीवार में एक विस्तृत घर का चित्र खींचती है। दो मंज़िलें वाली नए घर में मच्छरदानी की सुरक्षा में ज़मीन पर धूप फैलने तक वह नींद में पड़ी। लेकिन नींद में बैंक का नोटीस एक डरावनी सच्चाई जैसे धमकती है।

उस गरीब मज़दूरिन और उनके सपने के माध्यम से एक कठोर सामाजिक सच्चाई की प्रस्तुति हुई। कवि यह बताना चाहते है कि गरीब लोगों को सपने देखने का भी अधिकार नहीं है। उनका सपना एक कठोर यथार्थ पर टूटते है। आगे उसके लिए सपना देखना भी डरावना बन जाता है।

<u>मेरी खोज:</u>

(1) 'मगर नींद के टूटने की पूर्व ही नोटीस बैंक की आ धमकी सपने में।' कवि यहाँ किस सामाजिक सच्चाई की ओर इशारा करते हैं।

एक कठोर सामाजिक सच्चाई का चित्रण करनेवाली कविता है डॉ जे बाबू की 'सपने का भी हक नहीं'। एक गरीब मज़दूरिन अपने एक कमरेवाली झोंपड़ी में रहकर महल का सपना देखती है। नींद से जाग उठने के पहले उसने फिर देखा, एक बैंक का नोटीस, जो धमकी के रूप में सामने खड़ा है। आगे सपना देखना भी उसके लिए डरावना बन जाता है।

गरीब लोगों केलिए सपने देखने का भी अधिकार नहीं है।

Do Not Copy

अनुवर्ती कार्य:

(1) कवितांश का आस्वादन टिप्पणी लिखें।

हिंदीतर प्रदेशों की हिंदी साहित्यकारों में प्रमुख है ड़ॉ जे बाबू। 'सपने का भी हक नहीं' आपकी प्रसिद्ध कविता है, जिसमें एक गरीब मज़दूरिन का चित्र के सहारे एक कठोर सामाजिक यथार्थ का चित्र खींचने का प्रयास की गई है।

एक गरीब मज़दूरिन अपने बच्चों के साथ एक कमरेवाली झोंपड़ी में रहते है। रात में बच्चों के सो जाने पर वह अपने मन रूपी दीवार पर एक विशान घर का चित्र खींचती है, जो उसका स्वप्न भवन था।

उस घर में भोजन खाने केलिए और सोने केलिए अलग-अलग कमरे थे। रसोई बैठक के निकट थे। पूजा का कमरा ऊपरी मंज़िल में रख दिए।

काँक्रीट की छत के नीचे पीले रंग के दीवारों के मध्य में खिड़की-दरवाज़ें रख दिए। संगमरमर चमकनेवाली ज़मीन पर मेज़-कुरसियाँ रख दिए। टी. वी, होम थियेटर आदि बैठक की शोभा बढ़ाते हैं। ग्रानइट चमकनेवाले रसोई में फ्रिड्ज, माइक्रोवेव आदि रखने पर शोभा और बढ़ते हैं।

मसहरी की सुरक्षा में सूरज की धूप फैलने तक वह सो पड़ी। जाग उठने के पूर्व ही उसने बैंक का नोटीस देखा, जो एक धमकी है। इसलिए सपना देखना भी उसके लिए डरावना बन जाता है।

'सपने का भी हक नहीं' कविता एक कठोर सत्य का पर्दाफाश करता हैं कि उस मज़दूरिन जैसे गरीब लोगों को सपने देखने का भी अधिकार नहीं है।

पिछले सालों के परीक्षाओं में आए प्रश्न:

HSSLiVE.IN

MARCH 2016

(1) "मगर नींद के टूटने की पूर्व ही नोटीस बैंक की आ धमकी सपने में।" – इस सपने के बारे में युवती अपनी सहेली को एक पत्र लिखती है। वह पत्र तैयार करें। (Score 8)

झोंपड़ी में रहकर महल का सपना देखनेवाली मज़दूरिन – सामाजिक सच्चाई का कठोर यथार्थ – सपना देखना भी डरावना बन जाना।

JUNE 2017 (Say)

सूचना: निम्नलिखित कवितांश पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर दें।

मसहरी–सुरक्षा ..... सपने में।

(2) यह किस कविता का अंश हैं? (Score 1)

(मातृभूमि, आदमी का चेहरा, सपने का भी हक नहीं. कुमुद फूल बेचने वाली लड़की)

(3) युवती कब तक नींद में पड़ी रही? (Score 1)

(4) युवती सपने में क्यों भयभीत है? (Score 2)

(5) कवितांश का आस्वादन टिप्पणी लिखें। (Score 7)

MARCH 2018

(6) 'मगर नींद के टूटने की पूर्व ही नोटीस बैंक की आ धमकी सपने में।' – आदमी का सपना हमेशा अधूरा रहता हैं। कवितांश का विश्लेषण करें और लिखें।

(पाँच या छः वाक्यों में उत्तर लिखें।) (Score 4)

JUNE 2018 (Say)

(7) चमकती मेज़–कुरसियाँ

टी.वी., होम थियेटर बैठक में भाते।

घर की बैठक में क्या–क्या चमकती है?

(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें) (Score 2)

Do Not Copy

MARCH 2019

(8) 'मन दीवार पर अपना विस्तृत घर खींचने लगी' –
सपने के घर में कौन–कौन सी चीज़ें शोभा देती हैं?
(पाँच या छः वाक्यों में उत्तर लिखें।) (Score 4)

MARCH 2020

कवितांश पढ़ें और प्रश्नों के उत्तर लिखें।
ग्रानइट चमकती ..... धमकी सपने में।

(9) कब तक मज़दूरिन नींद में पड़ी रही? (Score 1)
(10) सपने की रसोई में कौन–कौन से चीज़ें हैं? (Score 1)
(11) कवितांश का आस्वादन टिप्पणी लिखें। (Score 6)

HSSLiVE.IN

SEPT 2020 (Say)

(12) सपने देखनेवाली मज़दूरिन किसकी सुरक्षा में सो रही थी?
(एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखें।) (Score 2)

परीक्षाकेंद्रित प्रश्न और उत्तर:

(1) रात में अपने बच्चे को सो जाने पर उस गरीब मज़दूरिन अपने विस्तृत घर के बारे में डायरी लिखते हैं. वह डायरी तैयार करें।

17.9.2019 सोमवार

बच्चे सो गई। रोज़ की तरह आज भी वे भूखे थे। सिर्फ पानी पीकर .....। पिछले दिन भी इस तरह चला। आगे कितने दिन! आज भी लॉटरी लिया। यदि इनाम मिलेगा तो नगर में ज़मीन खरीदूँगी।

वहाँ एक विस्तृत घर, दो मंज़िल वाले बड़ा घर! खाने-पीने और सोने केलिए अलग-अलग विशाल कमरें। बैठक के निकट रसोई रखें तो भगवान को कहाँ बिठाएगा? सोचे वक्त मेरे समझ में आया कि ऊपर की मंज़िल में पूजा की कमरा रख देगा। काँक्रीट के छत,नीचे पीले रंग के दीवारें। उस सुनहरे दीवारों के मध्य में विशाल खिड़की-दरवाज़ें। संगमरमर की शोभा से चमकनेवाले ज़मीन पर मेज़-कुरसियाँ! बैठक में टी. वी तथा होम थियेटर भी रख दूँगा।

रसोई ही उस घर का विशाल कमरा होगा। वहाँ ज़मीन ग्रानइट से बनाऊँगा। फ्रिड्ज, माइक्रोवेव आदि रसोई की शोभा और भी.....

उस घर में मैं अपने बच्चों के साथ शान से रहूँगा। नए-नए खाद्य पदार्थ! नवीन सुख-सुविधाएँ! बच्चों को शहर के सी. बी. एस. सी स्कूल में भर्ती.....

(2) गरीब मज़दूरिन अपपे सपने के बारे में सहेली को पत्र लिखते हैं। वह पत्र तैयार करें।

स्थान,
तारीख।

प्यारी सुमी,

तुम कैसी हो? उम्मीद करती हुँ कि तुम ठीक हो। पति और बच्चे कैसे हैं? सब खुशी हैं न। सब को मेरा प्यार।

मैं बहुत दुःखी हुँ.... पति वियोग के बाद की जीवन! अब मैं क्या करूँ? इन छोटे–छोटे बच्चों के साथ मैं इस एक कमरेवाले झोंपड़ी में... .. रात तो हमारेलिए डरावनी की बात है... .

हाँ, मैं अपने एक सपने के बारे में बताने केलिए लिख रही हुँ। कल मैं ने एक सपना देखा... . एक सुंदर सपना... . एक कमरेवाले झोंपड़ी के चार दीवारों की सीमा में रहनेवाली मैं तो उस सपने में एक विशाल दो मंज़िलवाले घर अपनाया। उस बड़े घर में मेरे बच्चें पंछी की तरह उड़ते देखा।

देखो, कल रात बच्चों के सो जाने के बाद मैं ने अपने मन रूपी दीवार पर अपना विशाल घर खींचने लगी। खाने–पीने–सोने केलिए अलग–अलग कमरें। यदि रसोई बैठक के निकट रखूँ तो पूजा के कमरे का स्थान! सोचते–सोचते मेरे समझ

Do Not Copy

में यह आया कि ऊपरी मंज़िल में भगवान को बिठाने केलिए कमरे बनाऊँगी... घर की छत काँक्रीट का हैं, उसके नीचे पीले रंग के दीवारों के मध्य में खिड़की–दरवाज़ें। संगमरमर की जंमीन पर मेज़–कुरसियाँ, टी.वी, होम थियेटर आदि भी है। ग्रानइट की रसोई में फ्रिड्ज, माइक्रोवेव आदि है।

लेकिन सपने में विघ्न के रूप में बैंक की नोटीस आया। कितनी बुरी हालत है मेरी? वह कर्ज तो सालों पूर्व हमने लिया है। पहले एक–दो साल की किश्तें दे चुका था। बाद में पति भी हमें छोडकर गए। बाद की किश्तें अभी बाकी है। वह तो आज नोटीस के रूप में.... हाँ, अच्छी ज़िंदगी सपने में देखने का अधिकार भी नहीं हैं।

घर में सब को मेरा प्यार। आशा है कि शीघ्र ही तुमसे मिलूँ। जवाबी पत्र की प्रतीक्षा में....

तुम्हारी प्यारी,
(हस्ताक्षर)
सुमित्रा

(3) सहेली के नाम मज़दूरिन का पत्र आपने पढ़ा होगा। अब सहेली का जवाबी पत्र लिखें।

स्थान,
तारीख।

प्यारी सुमित्रा,

तुमहारी पत्र तो दो–तीन दिन पहले ही मुझे मिला। मालूम है कि जवाबी पत्र लिखने मेंज़रा देरी हो गई हैं। कैसे लिखूँ मैं, तुम्हारी हालत पढ़कर मैं भी बहुत दुःखी हुँ।

मुझे मालूम नहीं कि क्या लिखकर तुम्हें आशा देनी है। तुम जानती हो कि मेरी अवस्था भी समान था। एक–दो वर्ष पूर्व मेरी हालत कैसी थी....हम दोनों के पति एक साथ काम करते रहे। मेरे पति शराब पीना शुरु किया, तब से हमारे जीवन भी आँसुओं से भीगा रहा। लेकिन अब तो मेरी जीवन की दिशा तो बदल गई। एक दिन तेरे पति ने उस आस्पताल के बारे में बताया कि जहाँ शराब पीनेवाले लोगों को अभय और चिकित्सा मिलती है। वहाँ दो–तीन महीनों की चिकित्सा से ही हमारे जीवन में इस तरह की एक साकारात्मक बदलाव आ गया और सुख–शांति मिल गए। अब, इस जीवन केलिए तुम्हारी पति से मेरे परिवार आभारी हुँ।

हाँ, कल से तुम भी हमारे साथ काम करने केलिए आओ। प्रतीक्षा मत छोडो....हमारे प्रार्थना भी अवश्य होगा। इस पत्र के साथ मैं कुछ पैसे भी भेज रही हुँ। बच्चों को अच्छा भोजन दे दो। प्रार्थना करती हुँ कि ईश्लर तुम्हारी रक्षा करें।

HSSLiVE.IN

तुम्हारी प्यारी,
(हस्ताक्षर)
सुमी

<u>परीक्षा केंद्रित कुछ प्रश्न। सबका उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करें:</u>

1. 'मगर नींद खुलने के पूर्व ही नोटीस बैंक की आ धमकी सपने में' – अगले दिन वह मज़दूरिन उस नोटीस लेकर बैंक मैनेजर के पास जाते हैं। उन दोनों के बीच का वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

सहायक संकेत: घर की हालत – बैंक की नोटीस – भुगतान केलिए ज़रा वक्त

मज़दूरिन : जी, मैं अंदर आऊँ।
मैनेजर : हाँ, बैठिए... ..बताइए... .
... ...

2. एक कमरेवाले झोंपड़ी में गरीब मज़दूरिन के बच्चे भूखे थे। सोने के पूर्व उनके बेटे और मज़दूरिन के बीच हो जानेवाले वार्तालाप कल्पना करके लिखें।

सहायक संकेत: रोज़ की तरह भूखी, घर की हालत, भविष्य के प्रति आशंका

मज़दूरिन : बेटे, क्या सोच रहे है?
बेटा : कुछ नहीं माँ, भूख लगता है... .
... ...

****

Do Not Copy